दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 64 ❑ अंक-20-21 ❑ दिल्ली ❑ जुलाई (द्वितीय), अगस्त (प्रथम) ❑ मूल्य : 2 रु.

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

दलित साहित्य पर शुरू किये तीन कोर्स

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए और दलित लेखकों, दलित साहित्यकारों तथा दलित साहित्य में विश्व–व्यापक प्रसार करने के इच्छुक अभ्यार्थियों की इच्छापूर्ति के लिए दलित साहित्य के मैट्रिक, बी.ए. व एम.ए. हिन्दी के समकक्ष निम्नलिखित तीन कोर्स प्रारम्भ करने जा रहा है।

1. दलित साहित्य रत्न कोर्स
2. दलित साहित्य भूषण कोर्स
3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स

1. दलित साहित्य रत्न कोर्स
यह हिन्दी की मैट्रिक सर्टिफिकेट कोर्स के समकक्ष होगा और इस कोर्स को पास करने के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी अभ्यार्थी को **'दलित साहित्य रत्न'** की उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

2. दलित साहित्य भूषण कोर्स
यह हिन्दी के बी.ए. कोर्स के समकक्ष होगा। इस कोर्स को पास करने के बाद अभ्यार्थी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी **'दलित साहित्य भूषण'** की उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स
यह हिन्दी के एम.ए. कोर्स के समकक्ष होगा। इस कोर्स को पास करने के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी अभ्यार्थी को **'दलित साहित्य प्रभाकर'** उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

ये तीनों कोर्स दलित साहित्य की अभिवृद्धि और लोगों की दलित साहित्य में अभिरुचि अभिवृद्धि के लिए संचालित किये जा रहे हैं। अभ्यार्थी उपरोक्त दलित साहित्य कोर्स पास करने के बाद इस प्रमाण पत्र को अपनी योग्यता के साथ जोड़ सकेगा।

उपरोक्त तीनों कोर्स में परीक्षा रजि. शुल्क 500 रु. है, जो लौटाया नहीं जायेगा। इसके अन्तर्गत आपको अपना नाम, शिक्षा, वर्तमान में कार्य, संस्थान से जुड़ाव सम्बन्धित विवरण (बायोडाटा) भेजना होगा। आपके लेखादि उत्तर को चयनित होने के बाद और कोर्स पूरा होने के बाद आपका नाम दलित साहित्य कोष पुस्तक में प्रकाशित किया जायेगा।

पाठ्यक्रम

I. दलित साहित्य रत्न कोर्स
(हिन्दी के मैट्रिक के समकक्ष)

दलित साहित्य सम्बन्धी कोई एक लेख निम्न विषय पर भेजना होगा–

1. बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कहा था–'गांव जात–पांत के दडबे हैं जहां जो व्यक्ति पैदा होता है, वहीं से वह बाहर नहीं निकल सकता। वहीं वह जीता है और वहीं वह घुट–घुटकर मर जाता है।' आप बाबा साहब डा. अम्बेडकर की इस युक्ति से कहां तक सहमत हैं? उस पर अपने विचार लिखें।
2. दलित साहित्य दलितोत्थान साहित्य है, इसका किसी जाति, धर्म, भाषा, प्रदेश से सम्बन्ध नहीं, पर दलित साहित्य इन सबसे विमुक्त है। आप इससे कहां तक सहमत हैं? अपने विचार लिखें।
3. भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने दलितोत्थान के लिए और ब्राह्मणवादी मनु वर्ण व्यवस्था के खिलाफ सबसे पहले शंखनाद किया था और इसमें वह काफी हद तक सफल हुआ है। इससे आप कहां तक सहमत हैं? अपने विचार लिखें।
4. दलित साहित्य ने लोगों में जनजागृति और जन चेतना जाग्रत की है। अब दलित समाज का हर व्यक्ति मनु की वर्ण व्यवस्था, जातपांत, ऊंच–नीच, भेदभाव, भाग्य–भगवान, धर्म–कर्म, और पाप–पुण्य की झूठी थ्योरी के ढकोसले को समझने लगा है और इसके प्रति सजग होकर दलित समाज को इससे मुक्ति दिलाने में जुटा है। इससे आप कहां तक इनसे सहमत हैं? अपने विचार लिखें।
5. आप अपने गांव के किसी एक दलित जाति के व्यक्ति की सच्ची गाथा लिखें जो मनु व्यवस्था से संघर्ष कर आगे बढ़ा हो।
6. आप अपने गांव के दलित समाज की स्थिति का वर्णन करें जो मनु की वर्ण व्यवस्था के कारण इसे मानने के लिए अभिशप्त है?
7. आपके बचपन की कोई ऐसी

(शेष भाग... पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

मनुवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र है–दलित साहित्य

*** डा. सोहनपाल सुमनाक्षर**

दलित साहित्य दो शब्दों से मिलकर बना है। इसमें पहला शब्द है दलित और उसके साथ जुड़ गया है साहित्य, और इस तरह सृजित हो गया है दलित साहित्य यानि दलितों का साहित्य, दलितोद्धारक साहित्य यानी एक ऐसा साहित्य जो स्थापित, ब्राह्मणवादी साहित्य–उसमें प्रतिवादित–प्रतिस्थापित वर्ण व्यवस्था, सामाजिक विषमताओं से पूर्ण मनुस्मृति विधि–विधान को नक्कार कर समतामूलक, स्वतंत्रतापूर्ण, न्यायवादी भाईचारे के समाज की स्थापना करता है। सीधे–सादे सपाट शब्दों में कहा जा सकता है–ब्राह्मणवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र है–दलित साहित्य।

दलित साहित्य की विवेचना करने से पहले हमें 'दलित' शब्द पर एक बार फिर खुलकर विचार करना होगा। 'दलित' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत को 'दल' धातु से हुई है जिसका अर्थ है–तोड़ना, हिस्से करना, कुचलना, शक्तिहीन करना।

'दलित' शब्द बना है–दल + त्त यानी टूटा हुआ, कटा हुआ, पिसा हुआ, चिरा हुआ, दला गया, मर्दित किया गया। जैसे चना को दल कर दाल बनने पर उसकी ऊर्जा खत्म हो जाती, सृजन शक्ति खत्म कर दी जाती है वैसे ही समाज के सबसे सृजनशील, श्रमजीवी, राष्ट्र निर्माता, मेहनतकश को वर्ण व्यवस्था के नाम पर समाज के सबसे नीचे के पायदान पर धकेलकर धन सम्पदा, सत्ता, शासन–प्रशासन, शस्त्र–शास्त्र, विद्याविहीन करके शक्तिहीन पंगु बनाकर समाज की दल–दल में धकेल कर दास–गुलाम–दलित बना दिया। मानवीय अधिकारों से वंचित– दासता से भरपूर गन्दगी जीने को मजबूर–जानवरों से बदतर जीवन जीने को बाध्य।

अंग्रेजी शब्दकोश में 'दलित' के लिए 'डिप्रेस्ड' शब्द दिया गया है जिसका अर्थ है–दबाना, नीचा करना, धीमा करना है, म्लान करना, दिल तोड़ना। हिन्दी शब्दकोश में 'दलित' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है–मसला हुआ, दबाया हुआ, रौंदा हुआ, मान मर्दित किया हुआ, जिसका दलन हुआ हो, जिसे पनपने या बढ़ने न दिया गया हो, कुचला गया हो, दबाकर रखा गया हो।

मनु की वर्ण व्यवस्था में समाज की सबसे नीचे के दायरे पर धकेल कर जिन्हें 'शूद्र' नाम दिया गया, और उन्हें शूद्र जाति कहा गया, उन्हें दलित वर्ग के नाम से कालान्तर में पुकारे जाने लगा। सबसे पहले ऐसे दलित वर्ग के लिए श्रीमती एनी बेसेंट ने अपने लेखने में 'डिप्रेस्ड कास्ट' शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद स्वामी विवेकानन्द और रानाडे ने शूद्र लोगों के लिए 'दलित' शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद बाबा साहब डा. अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम ने शूद्र व अस्पृश्य जातियों के लोगों के लिए 'दलित' का नाम दिया। 1935 में बाबू जगजीवन राम ने 'दलित वर्ग संघ' नाम की संस्था बनाकर दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष शुरू किया।

महात्मा गांधी ने शूद्र व अछूत

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

सम्पादकीय पेज 1 का शेष....मनुवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र है–दलित साहित्य

लोगों के लिए 'हरिजन' शब्द का इस्तेमाल किया। वहीं भारतीय संविधान में हम दलित वर्ग की जातियों को 'शड्यूल्ड कास्ट' 'अनुसूचित जाति' का नाम दिया गया।

समाज में मानवीय अधिकारों से वंचित शूद्र, अछूत, बहिष्कृत लोगों के लिए दलित, हरिजन, अनुसूचित जाति शब्दों का जो इस्तेमाल किया गया है, उसमें 'दलित' शब्द ही एक ऐसा शब्द है जो गत पांच हजार सालों में उनके साथ किए गये अमानवीय दुर्व्यवहार को प्रगट करता है। 'हरिजन' शब्द जाति व्यवस्था में निहित ऐतिहासिक अन्याय की चेतना को सवर्ण दृष्टिकोण को प्रगट करने वाला सहानुभूति शब्द है। अनुसूचित जाति शब्द अंग्रेजी शासन की देन है जो सिर्फ उन कुछ जातियों को सूचीबद्ध करता है जिन्हें समाज में प्रताड़ित किया गया हो। यह समग्र ऐसी जातियों व लोगों को प्रगट नहीं करता, जिन्हें वर्ण व्यवस्था के नाम पर सत्ता– सम्पदा व शस्त्र–शास्त्र व विद्याविहीन कर जानवरों से भी बदतर मूक व्यक्ति बना दिया गया हो। इन सबमें 'दलित' ही अकेला ऐसा शब्द है जो करुणा या पश्चाताप को नहीं, बल्कि बेवजह दमन, अपमान, तिरस्कार, अन्याय, बलात्कार का शिकार होने के स्वाभाविक रोष को व्यक्त करता है और उस ऐतिहासिक प्रकरण की ओर संकेत करता है कि उसे कैसे, किसने, कब, क्यों समाज के समतावादी ढांचे से अन्तिम छोर पर धकेल कर 'दलित' बना कर शक्तिहीन, मूक, बधिर बना दिया गया। अकेले 'दलित' शब्द में वह शक्ति है जो समाज में बहिष्कृत लोगों की दुर्दशा का बखान करते हुए उन्हें अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए खड़े होकर संघर्ष करने के लिए उत्प्रेरित करता है।

'दलित' शब्द असहाय, बेबस, लाचार, सोच विचारहीन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है वहीं अपना सब कुछ छीन लिए जाने वाले 'सर्वहारा' वर्ग के लोगों का भी शंखनाद है, जिनके विषय में कहावत मशहूर है–

जाकि धन धरती हरी,
रखिये न उन्हें संग,
अगर रखना पड़े संग, तो
उन्हें बनाये रखना अपंग।

इस तरह भाग्य–भगवान, पाप–पुण्य और धर्म कर्म का भय दिखाकर उन्हें पूर्व जन्म में किये अधम–नीच कर्म का सिद्धान्त बताकर, इस नीच जाति में पैदा होने को पूर्व जन्म के कर्मों से जोड़कर वे धर्म के नाम पर सदैव प्रताड़ते रहे, बंधुवा बनाकर बेगार लेते रहे और विद्याविहीन कर उनके बुद्धि–बल को मर्दित कर केवल खाने के लिए जूठन, पहनने के लिए फटे–पुराने चीथड़े–उतरन, और नीचे जमीन पर सोने के लिए घास–फूंस की बिछावन देकर, दास व गुलाम बनाकर अपनी सेवा कराते रहे। 'दलित' शब्द धर्म और पुनर्जन्म के नाम पर किये षड्यंत्र का पर्दाफांस करते हुए ब्राह्मणवादी वर्ण व्यवस्था पर सीधी चोट करता है। यही दलित शब्द जब साहित्य के साथ जुड़कर दलित साहित्य बन जाता है तो यह ब्राह्मणवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र बन जाता है।

'साहित्य' का अर्थ है—या हिताय सः साहित्य यानी जो कल्याणकारी है, हितकारी है, परोपकारी है–वही ही साहित्य है। वह साहित्य सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की भावना से परिपूर्ण होता है। 'साहित्य' की इस कसौटी पर जब हम 'हिन्दी साहित्य' को परखते हैं तो वह कहीं भी 'साहित्य' की धारणा को पूरा नहीं करता। समग्र हिन्दी साहित्य ब्राह्मणवादी साहित्य है जो कपोल कल्पित सोच और मनघडन्त विचारों पर आधारित है। उसमें आसमान की उड़ान की कल्पना तो है पर धरती पर वर्ण व्यवस्था के नाम पर प्रताड़ित, बाधित बन्धुआओं की छाया भी दिखाई नहीं देती। उस ब्राह्मणवादी साहित्य में उच्च वर्णों के राज निवासों में गूंजती पायलों की आवाज तो सुनाई पड़ती है, पर दूसरी ओर अमानवीय व्यवस्था के पीड़ित और कर्राते मनुष्यों का रुदन व क्रन्दन कहीं सुनाई नहीं पड़ता। उनके इस ब्राह्मणवादी साहित्य में नारी के नख–शिख से पैरों तक के सौन्दर्य का वर्णन तो दिखाई देता है, पर वर्ण व्यवस्था के नाम पर समाज के सबसे नीचे के पायदान पर धकेले व्यक्ति के शरीर पर लाठी, डंडे, रोड़े की मार से उभरे मवाद भरे घाव नहीं दिखाई देते।

तथाकथित उच्च वर्ण की जैसी सोच है वैसा ही उसका साहित्य है। यह पेट भरे, अय्याशी लोगों का साहित्य है जो उन्होंने अपनी भड़ांस निकालने और दरबारी लोगों के बीच वाह–वाही लूटने के लिए गाल बजाई करते हुए लिखा है। उसमें न आपको वर्ण व्यवस्था, जात–पांत, ऊंच नीच, भेदभाव के खिलाफ कुछ लिखा मिलेगा और न ही भाग्य–भगवान, पाप–पुण्य, धर्म–कर्म और पुनर्जन्म के विरुद्ध कोई आवाज सुनाई देगी। वहां आपको मिलेगा मनु महाराज की मनुस्मृति पर आधारित चतुर्वर्ण व्यवस्था जहां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तो सुपर इंसान हैं बाकी 'शूद्र' वर्ण के लोग जानवरों से भी अधम, नीच, अस्पृश्य हैं जिनकी छाया से ही 'पाप' लग जाता है और जिससे मुक्त होने के लिए गंगा स्नान करना पड़ता है। उनकी और उनके ब्राह्मणवादी साहित्य के दूषित भावना के कारण समाज एकजुट सबल न हो सका और इस वर्ण व्यवस्था के कारण भारत देश लगभग ढाई हजार साल तक विदेशियों का गुलाम रहा।

दलित साहित्य–दलितोत्थान साहित्य यानि वह साहित्य जो दलितों, पीड़ितों, शोषितों, उपेक्षितों और असहाय वर्ग को उत्थान और नव विकास के लिए प्रेरित करता है, जो ऐसे व्यक्तियों की उनके गौरवमयी इतिहास से परिचित कराते हुए उनको उनकी मानवीयता की पहचान से अवगत कराता है। यह वह साहित्य है जो धरती से

जुड़े लोगों को उनकी समस्या और दुर्दशा से अवगत कराते हुए उनको निराकरण और समाधान के उपाय बताता है।

दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो सभी तरह वर्ण व्यवस्था, जात–पांत, ऊंच–नीच, भेदभाव के दायरे से ऊपर है और जिसे धर्म, भाषा और प्रदेश की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। यह समाज के सर्वहारा वर्ग के समान निश्चल और सरल है। इसे अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए किसी छंद, अलंकार आदि की आवश्यकता नहीं। दलन की वेदन, शोषण की कुढ़न, अन्याय का उत्पीड़न और अत्याचार का रुदन, अपमान की पीड़ा–अभिव्यक्ति भाषा और अलंकार नहीं देखती।

दलित साहित्य पुनर्जन्म, भाग्य, भगवान, धर्म, कर्म के सिद्धान्त को नक्कारता है और व्यक्ति को साधना, आस्था और चिन्तन के प्रति उन्मुख करता है। वह यह साहित्य है जो एक स्वस्थ, उचित लक्ष्य की ओर मानव समाज में समृद्धि भाव उत्पन्न करता है। यह इंसान को इंसान से तोड़ता नहीं जोड़ता है। वह इंसान में इंसान के प्रति भेदभाव, तिरस्कार, अलगाव, घृणा पैदा नहीं करता। अपितु उनमें मानव प्रेम, सहिष्णुता, भ्रातृ–भाव पैदा करता है। मानव जीवन में समरसता और समव्यता लाता है।

दलित साहित्य इंसानियत भेदभाव, छुआछूत, घृणा, नारी शोषण, बंधुआ जीवन, धार्मिक कठ मुल्लापन, कर्मकांड, रुढ़िवाद और ब्राह्मणवाद के खिलाफ खुला विद्रोह है। जो इंसानियत प्रेमी है, उनकी वह प्रशंसा करता है, जो दलितोत्थान में जुड़े हैं, उनको फूल चढ़ाता है, जो मानव अधिकारों के लिए जूझ रहे हैं, उनका सम्मान करता है और जो दासता और शोषण से मुक्ति दिलाते हैं, उनकी आराधना करता है।•

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :

हिमायती

बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9

मो. 9810278936

पृष्ठ 1 का शेष...भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने दलित साहित्य पर शुरू किये तीन कोर्स

घटना बतायें जिसके कारण आपको दलित होने की वजह से अपमानित होना पड़ा हो।

8. आपके दलित होने के कारण आपके स्कूल के साथियों द्वारा आपके साथ किये गये दुर्व्यवहार, छुआछूत, भेदभाव, जात–पांत से सम्बन्धित कोई घटना बतायें।
9. आपके जीवनकाल में दलित होने के कारण आई बाधाओं और उनके निराकरण के सम्बन्ध में विस्तार से बतायें।
10. आपको किन दलित सन्तों, महात्माओं, दलित नायकों, महापुरुषों के व्यक्तित्व व कृतित्व ने प्रभावित किया है, जिनके सन्देशों पर चलकर दलित समाज अपना पुरातन गौरव लौटा सकता है?

पाठ्यक्रम

II. दलित साहित्य भूषण कोर्स (स्नातक के समकक्ष)

'दलित साहित्य भूषण' कोर्स हिन्दी के बी.ए. के समकक्ष होगा। इस कोर्स को उत्तीर्ण करने के बाद आप दलित साहित्य के मर्मज्ञ हो जायेंगे और दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए दलित समाज के अन्य शिक्षित लोगों को भी प्रेरित कर सकेंगे। इसके बाद दलित साहित्य भूषण उपाधि को आप अपने नाम के साथ लगाकर समाज में गर्व महसूस करेंगे क्योंकि अभी तक किसी भी ब्राह्मणवादी संस्थान ने आपको सम्मानित करके सम्मान नहीं दिया है। दलित समाज जो सदियों से सम्मान की लड़ाई लड़ रहा है, उसकी क्षतिपूर्ति में यह एक विशेष कदम होगा।

दलित साहित्य भूषण कोर्स दलित साहित्य पर आधारित होगा जिसमें अद्यतन दलित साहित्य और उनका अभी तक प्रकाशित दलित साहित्य से सम्बन्ध होगा।

कोर्स सम्बन्धित प्रश्न

1. आप कौन–कौन दलित साहित्यकारों को जानते हैं जिन्होंने दलितोत्थान के लिए दलित साहित्य की रचना की है? उनकी दलित साहित्य, दलित कला, दलित पत्रकारिता, दलित इतिहास और दलित धर्म के क्षेत्र में क्या उपलब्धियां हैं?
2. क्या आपने दलित साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे आत्मकथा, कहानी, कविता, दलित साहित्य पर निबन्ध आदि लेख की रचना की है? क्या उनमें से कोई कहीं प्रकाशित हुई है, उसके विषय में संक्षिप्त में बतायें।
3. किसी एक दलित साहित्यकार से की गई 'भेंट वार्ता' का विवरण दीजिये, जिससे दलित समाज के उत्थान में परिवर्तन आया हो।
4. संत गुरु रविदास प्रथम दलित साहित्यकार हैं जिन्होंने ब्राह्मणवादी अन्धविश्वास ओर पाखण्ड का अपनी रचनाओं से पर्दाफाश किया है। उनके साहित्य से दलित समाज में जो जाग्रति आई है, उसके विषय में बतायें।
5. हिन्दी के पांच दलित साहित्यकार और उनकी श्रेष्ठ कृतियों का संक्षिप्त विवरण दें जिनसे दलित साहित्य की अभिवृद्धि हुई हो?
6. हिन्दी दलित साहित्य समाज के 85 फीसदी मेहनतकशों का साहित्य है जिन्होने मनु की वर्ण व्यवस्था, छुआछूत, भेदभाव, दासता झेली है और आज भी अदृश्य रूप से झेल रहे हैं क्योंकि अश्पृस्यता, जाति भेदभाव हिन्दू धर्म में किसी

ना किसी रूप में विराजमान है। ऐसी स्थिति में दलित साहित्य जहां दलितों के अन्दर जाग्रति पैदा कर रहा है, वहीं मनु की वर्ण व्यवस्था के खिलाफ भारत के संविधान को लेकर संघर्ष कर रहा है। इस पर अपना मत लिखिये।

7. दलित साहित्य के दलित साहित्यकारों ने दलित पत्रकारिता के माध्यम से दलित चेतना जागृत की है, बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने 'मूक नायक', स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' ने 'आदि हिन्दू धर्म का डंका', मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने 'समता', सुन्दरलाल सागर ने 'अनार्य भारत' तथा डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने 'हिमायती' समाचार प्रकाशित कर दलितों में जाग्रति लाने का कार्य किया, जिससे दलितों में अपने अधिकारों के प्रति जनचेतना उत्पन्न हुई। इस विषय में अपने विचार लिखें।
8. दलित साहित्यकार ओम प्रकाश वाल्मीकि की 'ठाकुर का कुआं', डा. सोहनपाल सुमनाक्षर की 'सिन्धु घाटी बोल उठी', डा. श्योराज सिंह 'बेचैन' की 'मैं क्रोंच हूँ', डा. कालीचरण की 'अपना–अपना आरक्षण' अमर रचनाएं हैं जिन्होंने दलितों के सामाजिक परिवर्तन में काफी योगदान दिया है। आप इन कविताओं पर संक्षिप्त में विवरण दें।
9. भारतीय दलित साहित्य अकादमी का दलित साहित्य की स्थापना, उद्‌भव उसकी सीमा और उसकी उपलब्धियां का विशेष योगदान है। इस विषय में अपने विचार लिखें।
10. दलित साहित्य भाषा, क्षेत्र, जाति, धर्म, अलंकार, छन्द से युक्त है। वह साधारण जन का साहित्य है जो देश के 85 फीसदी उपेक्षित, अधिकार विहीन, मूक लोगों की कर्मठता को सामने रखकर लिखा गया है। आप अपनी सहमति से अवगत करायें।

पाठ्यक्रम

III. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स (स्नातकोत्तर एम.ए. समकक्ष)

पूर्वपाठ – यह दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स हिन्दी के एम.ए. कोर्स के समकक्ष होगा जो दलित साहित्य की सर्वोच्च उपाधि के रूप में होगा। यह कोर्स दलित साहित्य के समग्र ज्ञान पर आधारित होगा। भारतीय भाषाओं में जहां भी दलित साहित्य छिपाया गया है, विनष्ट किया गया है या अन्य नाम से भाषित किया गया है, वह कोर्स का विशेष अंग होगा।

दलित साहित्य महाकाव्य रामायण, महाभारत, उत्तर रामचरित मानस व भगवत गीता–यहां के नायक नायिका व उनके पराक्रम, वीरता–शूर वीरता से भरपूर है। इसी क्रम में अद्यतन खोजों में प्राप्त विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों और इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ियों से अभिभूत है।

दलित साहित्यकार और उनकी रचनायें, दलित राजा, महाराजा और उनकी उपलब्धियां, दलित समाज सुधारक और उनकी उपलब्धियां, दलित संत, महात्मा महर्षि का दलित समाजोत्थान में योगदान, दलित साहित्य और उनके वीर–वीरांगनायें व उनकी उपलब्धियां, दलित साहित्य के प्रेरक और उत्थान व स्थापितकर्त्ता, दलित साहित्य का सामाजिक परिवर्तन में योगदान, दलितों का राष्ट्र निर्माण में योगदान, दलितों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, कलाओं में योगदान। दलित साहित्य में अभिन्न अंग है।

वास्तव में पृथ्वी शेषनाग के सिर पर नहीं बल्कि दलितों के सिर व कन्धों पर टिकी है जिसने इसका नवनिर्माण तो किया ही है, इस निरन्तर अपनी मेहनत व श्रम से स्थायी व सुदृढ़ बनाया है और उसी धरती से पूर्णतः सम्बन्धित है दलित साहित्य और जो दलित साहित्य में पारंगत होगा, वही होगा दलित साहित्य का प्रभाकर सूर्य–शाश्वत प्रकाश देने वाला और प्राणि जनों को निरन्तर नवजीवन प्रदान करने वाला।

दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स दलितों में सम्मान तो भरेगा ही, साथ ही आगे बढ़ने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स का विशेषज्ञ, पारंगत पंडित बनने के लिए दलित साहित्य की निम्न धारा का ज्ञान अनिवार्य होगा।

कोर्स सम्बन्धित प्रश्न

1. दलित साहित्य की अमर कृतियां – गुरु रविदास जी की अमृत वाणी, सत्गुरु कबीर दास जी की बीजक, गुरु घासीदास जी का अमर वचन ग्रन्थ हैं। इन महान ग्रन्थों के विषय में आप क्या जानते हैं? इन ग्रन्थों में क्या–क्या मुख्य सन्देश दिये गये हैं, संक्षेप में बतायें।
2. दलित साहित्य की सामाजिक परिवर्तन में भूमिका क्या है? विस्तार से बतायें।
3. हिन्दी के किसी एक दलित साहित्यकार का जीवन और उसके साहित्य का वर्णन करें जिससे आप प्रभावित हैं।
4. दलित साहित्य का वर्तमान परिदृश्य क्या है? उनका संक्षेप में वर्णन करें।
5. दलित समाज के निम्न नायकों के विषय में आप क्या जानते हैं? उनकी दलितोत्थान की उपलब्धियां क्या हैं? किन्हीं 5 व्यक्तियों के दलित समाज के उत्थान में किये कार्यों पर प्रकाश डालें–
   - बाबा साहब डा. अम्बेडकर
   - बाबू जगजीवन राम
   - श्री बी.पी. मौर्य
   - मान्यवर कांशीराम
   - बहन मायावती
   - श्री संघप्रिय गौतम
   - बाबू परमानन्द
   - वीरांगना झलकारीबाई
   - वीरांगना सावित्रीबाई फुले
   - वीरांगना फूलनदेवी
   - नानक चन्द रत्तू
   - कबीर
   - डा. सविता अम्बेडकर
   - महारानी मीराबाई
   - महान बलिदानी राजाराम मेघवाल
   - दशरथ मांझी (माउंटेन मैन)
6. दलितों के पुरातन गौरवमयी इतिहास की निम्न धरोहर के विषय में आप क्या जानते हैं–
   - सिन्धु घाटी
   - मोहनजोदड़ो
   - हड़प्पा
   - धोलवीरा

• कालीबंगा–पीली बंगा

7. दलित कलाओं के मूकदर्शक दलितों की निम्न धरोहर के महत्व पर प्रकाश डालें–
   • एजेन्ता
   • एलौरा
   • हल्दीघाटी
   • भीमा कोरेगांव
8. दलित साहित्य के निम्न आदि महापुरुषों के विषय में आप क्या जानते हैं? संक्षेप में लिखें।
   • रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि
   • महाभारत–श्रीमद्भागवति गीता के रचयिता महर्षि वेदव्यास
   • मां गंगा को भारत की धरती पर लानेवाले महान इंजीनियर–भगवान भागीरथ
9. दलित इतिहास के निम्न अमर नायकों की महानता पर प्रकाश डालें–
   • श्रवण कुमार
   • एकलव्य
   • महाराजा कर्ण (सूतपुत्र)
   • दासी मंथरा
   • महारानी केकैयी
   • महाराजा बाली–अंगद
   • सूपर्णखां
   • महर्षि शम्बूक
   • नल–नील
   • पवन पुत्र हनुमान
   • माता सीता
   • माता द्रौपदी
   • माता गांधारी
10. दलित इतिहास की अमर कड़ी–
   • महाराजा बृहत्दत्त
   • पुष्यमित्र शूंग
   • महाराजा अर्जुन व दुर्योधन–पांच गांव न देने पर हुआ महाभारत।

सहायक पुस्तकें दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स

1. **बाबा साहब डा. अम्बेडकर की अमर कृति**–भारत का संविधान
2. **डा. अम्बेडकर की ऐतिहासिक कृति**–ऐनीहिलेसन आफ कास्ट्स (जाति का उन्मूलन) ग्रंथ
3. रिडल्स आफ रामा एंड कृष्णा (राम व कृष्ण की पहेलियां)
4. **बाबा साहब की ऐतिहासिक कार्य–**
   क. महाड़ का जल आन्दोलन
   ख. कालाराम मन्दिर प्रवेश आन्दोलन
   ग. गांधी–अम्बेडकर समझौता–पूना पैक्ट
5. **बाबा साहब डा. अम्बेडकर की बुद्ध धर्म दीक्षा (नागपुर)**
6. **गुरु रविदास के सपनों का भारत**
   बेगमपुर शहर–लोकतांत्रिक राज्य

कोर्स में सहायक दलित साहित्य सम्बन्धित अन्य जरूरी जानकारी

यह उन मूक नायकों का साहित्य है जिनको मनु की वर्ण व्यवस्था के नाम पर शिक्षा, दीक्षा, शस्त्र–शास्त्रों के अधिकारों से प्रतिबन्धित कर उन्हें वर्ण व्यवस्था के चौथे वर्ण में 'शूद्र', अनार्य, दास–दस्यु बनाकर उन पर अपार जुल्म किये गये। यह दलितों का साहित्य है जो अधिकारविहीन हैं और कर्त्तव्य के नाम पर जिन्हें सदियों से गुलाम बनाये रखा।

दलित साहित्यकार, दलित शूरवीर व दलित वीरांगनाओं का क्या योगदान है, इसे जानना जरूरी है।

प्रथम दलित साहित्यकार–महर्षि वाल्मीकि–आदिग्रन्थ–रामायण तथा उत्तर रामचरितम् के रचियता।

महर्षि व्यास–आदिग्रन्थ–महाभारत एवं श्रीमद्भगवत गीता एवं 18 पुराणों के रचयिता।

आदि हिन्दी कवि–श्री गुरु रविदास एवं सद्गुरु कबीर

<u>रामायण महाकाव्य में वर्णित दलित पात्र</u>

1. सीता 2. उर्मिला, 3. केकैयी, 4. मंथरा 5. राम, 6. लक्ष्मण, 7. भरत 8. शत्रुघ्न, महाराजा दशरथ एवं श्रवण कुमार, कौशल्या 9. सूपर्णनखा 10. भीलनी 11. मारीच 12. बाली 13. सुग्रीव 12. अंगद 13. हनुमान 14. रावण 15. कुम्भकरण 16. मेघनाथ 17. मन्दोदरी 18. नल–नील 19. शंबूक ऋषि।

<u>महाभारत महाकाव्य में वर्णित दलित पात्र</u>

1. एकलव्य 2. सूतपुत्र कर्ण 3. अर्जुन 4. भीम 5. सहदेव, नकुल, युधिष्टर, दुर्योधन, धृतराष्ट्र, शकुनी मामा, गांधारी, कुन्ती, गुरु द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, कृपाचार्य, पाण्डु (पांडव), द्रोपदी, सत्यवती, सत्यवान, श्रीमद् भगवत गीता।

गीता उपदेश–श्रीकृष्ण व अर्जुन संवाद, कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, द्रोपदी स्वयंवर, लाक्षागृह।

<u>हमारे दलित नायक</u>

गुरु रविदास, सद्गुरु कबीरदास, गुरु घासीदास, गुरु नानक देव, गुरु गोविन्द सिंह, रंगरुटा–बाबा जीवन सिंह, लखिया बंजारा, स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर', मुन्शी हरि प्रसाद टम्टा, बाबू मंगूदास, बाबा साहब डा. अम्बेडकर, बाबू जगजीवन राम, बाबू परमानन्द, डा. सूरजभान, डा. माता प्रसाद, महर्षि दयानन्द।

<u>भारतीय दलित साहित्य अकादमी की उपलब्धियां</u>

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की दलित साहित्य की स्थापना, उसकी सीमा और सम्वर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अकादमी ने अपनी स्थापना के गत 40 वर्षों में जहां पुरातन दलित साहित्य को नये दलित साहित्य की रूपरेखा और सीमा में लाकर और सभी विधाओं में दलित साहित्य निर्माण कराकर कालेज व विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थापित किया और उस पर एम.फिल, पी.एच.डी. शोध कार्यक्रमों के अन्तर्गत शामिल करके दलित साहित्य पर शोध कराने में अद्भुत कार्य किया है जिसकी बदौलत आज देश–विदेश में सभी भाषाओं व सभी विषयों व विधाओं दलित साहित्य की रचना की जा रही है। आज स्कूल, कॉलेज के पुस्तकालय दलित साहित्य से भरे पड़े हैं। रामायण के रचियता महर्षि वाल्मीकि तथा महाभारत के रचनाकार महर्षि व्यास को दलित साहित्य का 'आदिकवि' का सम्मान भी अकादमी की देन है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने ही सबसे पहले बाबा साहब डा. अम्बेडकर के नाम पर डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना की, उन्हें 'भारतरत्न' दिये जाने की मांग की और डा. अम्बेडकर जन्म शताब्दी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने तथा डा. अम्बेडकर फाउंडेशन बनाने पर उनके सभी

आर. एन. आई. नं. 40611/62
RNI No. 40611/62

लेखों व रचनाओं का अनुवाद करके देश के सभी भाषाओं में प्रकाशित करने की मांग भारत सरकार से की थी। प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के कार्यकाल में अकादमी की इन मांगों को स्वीकार कर उन्हें साकार रूप दिया गया जो भारतीय दलित साहित्य अकादमी के लिए गौरव और स्वाभिमान की बात है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी अब तक 41 राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन, 2 विश्व दलित साहित्यकार सम्मेलन तथा हजारों प्रादेशिक सम्मेलन व जिला सम्मेलन आयोजित कर चुकी है। उनके द्वारा दलित साहित्य का नाम व कार्य की ख्याति व पहचान राष्ट्रीय स्तर व विश्व स्तर पर हुई। आज अकादमी व दलित साहित्य किसी के पहचान की मोहताज नहीं है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के दलित साहित्य को शिखर तक पहुंचाने के पीछे जहां एक सशक्त निष्ठावान लोगों की टीम है जो दृढ़संकल्प के साथ निस्स्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्य पूर्ति में जुटे रहते हैं, वहीं उसके अभिन्न अंग के रूप में **'हिमायती'** हिन्दी पाक्षिक और **बेगमपुरा टी. वी. चैनल** गत वर्षों से दलित साहित्य आन्दोलन की पताका को देश–विदेश में फहरा रहे हैं जिससे जन जन व हर घर तक दलित साहित्य का नाम, काम, पहचान उनके हृदय में छाये हुए हैं।

दलित धरोहर स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर', बाबा मंगूदास, मुंशी हरि प्रसाद टम्टा, बाबू जगजीवन राम, भारतरत्न बाबा साहब डा. अम्बेडकर को जन–जन के हृदय सम्राट बनाने वाली अकादमी ही है। महात्मा जोतीबा फुले, वीरांगना सावित्रीबाई फुले, वीरांगना झलकारीबाई, श्रीमती फातिमा शेख के महान कार्यों को उजागर करने वाली अकादमी ही है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के निर्देशन में वैसे तो हजारों पुस्तकें दलित साहित्य के अन्तर्गत विभिन्न विधाओं और विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हुई हैं, पर अकादमी द्वारा प्रकाशित निम्न पुस्तकें काफी लोकप्रिय व प्रशंसनीय हुई हैं–

1. दलित साहित्य वार्षिकी 2. हूज हू आफ दलित राईटर्स, आफ इन्डिया, 3. बुद्धा टू अम्बेडकर, 4. हूजहू–इन्टरनेशनल एंड नेशनल अवार्डीज आफ बी.डी.एस पार्ट–1 एंड हूजहू– इन्टरनेशनल एंड नेशनल अवार्डीज पार्ट–2, 6. भारतीय दलित साहित्य अकादमी– राष्ट्रीय सम्मेलन स्मारिका–1–41, 7. सिन्धु घाटी के सृजक–शूद्र व वणिक, 8. नागवंश, आदिमजाति– चमार, 9. युगपुरुष बाबू जगजीवन राम 10. सिन्धु घाटी बोल उठी 11. अब नहीं रहेंगे हाशिये पर, 12. अन्धा समाज–बहरे लोग, 13. विश्वविभूति–डा. अम्बेडकर, 14. भारत की गुलामी के 22 सौ साल।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने हमेशा विद्धता का सम्मान किया है। दलित साहित्य, कला के क्षेत्र में समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को डा. अम्बेडकर, महात्मा जोतीबा फुले, भगवान बुद्ध, वीरांगना सावित्रीबाई फुले, वीरांगना झलकारी बाई आदि के नामों पर स्थापित अवार्डों से सम्मानित किया है। जो लोग दलित साहित्य के मर्मज्ञ हैं, उन्हें 'प्रोफेसर' की मानद उपाधि से सम्मानित किया। ऐसे ही जिन लोगों ने धार्मिक क्षेत्र में अपनी उत्कृष्टता प्रगट की, उन्हें 'आचार्यश्री' मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसी क्रम में अकादमी दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए दलित साहित्य सेवा में संलग्न विद्वानों को दलित साहित्य रत्न, दलित साहित्य भूषण, दलित साहित्य प्रभाकर सर्टिफिकेट कोर्स संचारित कर रही है जो दलित साहित्य में ज्ञान, विशेषज्ञता व रुचि के आधार पर मूल्यांकन करके मानद उपाधि से सम्मानित करेगी। इस मानद प्रमाण पत्र प्राप्ति के बाद वह विशेषज्ञ विद्वान नाम के साथ सगर्व लिख सकेगा। रत्न, भूषण, प्रभाकर उपाधि के लिए परीक्षा पत्र भरकर परीक्षा में भाग ले सकेगा। उसकी विद्वता को अकादमी उचित सम्मान प्रदान करेगी।

दलित साहित्य रत्न कोर्स
दलित साहित्य भूषण कोर्स
दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स
अवधि – 6 महीना

कोर्स में प्रवेश हेतु विवरण

अभियार्थी का नाम.....
पिताजी का नाम .....
जन्मतिथि.....
शिक्षा .....
वर्तमान में सेवा कार्य.....
कोर्स का नाम.....
मोबाइल नं.....
ईमेल.....
पूर्ण पता .....
.....

दलित साहित्य की विधा में अभिरुचि

1. साहित्य, 2. कला, 3. पत्रकारिता, 4. इतिहास व संस्कृति, 5. समाज सेवा, 6. धर्म में रुचि

वांछित कोर्स का नाम दलित साहित्य रत्न / भूषण / प्रभाकर

रजिस्ट्रेशन नं.....
कोर्स अवधि.....

कोर्स में प्रवेश के लिए योग्यता

1. दलित साहित्य रत्न कोर्स में प्रवेश के लिए 10वीं पास / मैट्रिक
2. दलित साहित्य भूषण कोर्स में प्रवेश के लिए इन्टर पास / दलित साहित्य रत्न कोर्स
3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स में प्रवेश के लिए बी.ए. पास / दलित साहित्य भूषण कोर्स

पंजीकरण शुल्क – 500 रु.

पूर्ण अवधि शिक्षण शुल्क

दलित साहित्य रत्न कोर्स
– 2000 रु. (2 किश्तों में)

दलित साहित्य भूषण कोर्स
– 3000 रु. (3 किश्तों में)

दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स
– 4000 रु. (4 किश्तों में)

परिणाम की घोषणा – प्रत्येक वर्ष दलित साहित्य दिवस 6 अक्तूबर को

उपाधि सम्मान – प्रत्येक वर्ष अकादमी के राष्ट्रीय सम्मेलन समारोह में

परीक्षा – अभ्यार्थी की परीक्षा लिखित होगी। अकादमी परीक्षा पत्र तथा उत्तर पुस्तिका उपलब्ध करायेगी।

अनिवार्यता – प्रत्येक कोर्स के लिए रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा। उसके अभ्यार्थी कोर्स के प्रश्नों का उत्तर लिख करक भेजन पर मूल्यांकन करेगी, उसी आधार पर कोर्स का परिणाम घोषित होगा। कोर्स उर्त्तीण के बाद कोर्स की मानद उपाधि का प्रमाणपत्र अकादमी की ओर से प्रदान किया जायेगा।

विशेष सम्मान – प्रत्येक कोर्स में विशिष्ट दर्जे में उर्त्तीण होने वाले अभ्यार्थी को राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेष्य राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित करेगी। •

संविधान के मूल्य और लोकतंत्र की दिशा

• जगमोहन सिंह राजपूत

भारत के आजाद होने के बाद देश का स्व–निर्मित संविधान 26 जनवरी 1950 से लागू हुआ। इसमें प्रत्येक नागरिक को समानता, समता और गरिमा के साथ जीवन यापन करने के लिए आवश्यक प्रावधान निहित थे। इनके क्रियान्वयन के लिए देश को अपनी संसद की संरचना करने का उत्तरदायित्व मिला। साथ ही हर प्रकार की विविधता से परिपूर्ण संप्रभु राष्ट्र के संचालन और पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी भी मिली। अंग्रेजों के शोषण के कारण देश आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत कठिन स्थिति में था। मगर भारत को उसके परंपरागत ज्ञान, त्याग और वैश्विकता से अलग नहीं किया जा सका था। परिणाम–स्वरूप द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्वतंत्र होने वाले राष्ट्रों में भारत के संविधान ने अपना अग्रणी स्थान बनाया और उसके क्रियान्वयन ने इसे सिद्ध भी कर दिया है। लोकतंत्र में संविधान सत्ता पक्ष को मार्ग दिखाता है और विपक्ष को विकल्पों के साथ सकारात्मक आलोचना के ऐसे अवसर प्रदान करता है, जो उसे सत्ता में वापसी की राह दिखाते हैं।

यह अपेक्षित ही है कि सत्ता पक्ष हर समय दोहराता है कि वह निष्ठापूर्वक संविधान का पालन कर रहा है। जबकि विपक्ष इसे नकारता है। कौन सही है–कौन नहीं, इसका फैसला जनता विधानसभा और लोकसभा के चुनावों में करती रही है। यह राजनीति में शालीनता के स्तर का मापक होता है कि जो चुनाव में विजयी न हो पाए, वह भी विनम्रता से जन–निर्णय को स्वीकार कर ले। मगर इस मामले में हम कमजोर होते जा रहे हैं ! दुर्भाग्य से शालीनता, समता, समादर, सौम्यता, जैसे व्यावहारिक तत्त्व राजनीति में ढूंढ़ पाना लगातार कठिन होता जा रहा है। भारत का संविधान निर्माण करने वाले अधिकांश लोग वे थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी की थी और जो देश को भली–भांति समझते थे। भीम राव अम्बेडकर और राजेंद्र प्रसाद की संविधान निर्माण में अग्रणी भूमिका थी। दोनों ही विद्वान और प्रखर अध्येता थे। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है संविधान सभा की अंतिम बैठक में इन दोनों के भाषण के कुछ विशेष अंश, जो उनकी दूरदृष्टि की उज्ज्वलता तथा सटीकता को दर्शाते हैं। उनकी चिंताओं ने अब वह स्वरूप ले लिया है, जिसकी आशंका उन्होंने जताई थी। अम्बेडकर ने आगाह किया था कि संविधान और उसके बाद की राजनीति दुहाई तो समता और समानता को देगी, लेकिन जो सामाजिक और सांस्कृतिक दूरियां सदियों में पनपी थीं तथा जो सांप्रदायिक दूरियां भारत विभाजन से जन्मी थीं, वे संविधान की व्यवहारिकता को प्रभावित करेंगी।

26 नवंबर, 1949 को राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि राष्ट्रहित और जन–कल्याण इस पर निर्भर करेगा कि देश का शासन तंत्र कैसे चलता है और उसे चलाने वाले लोग कैसे हैं। यदि चयनित प्रतिनिधि चरित्रवान और ईमानदार होंगे, तो अनेक कमियों के रहते हुए भी यह संविधान लोक कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकेगा। इससे पहले 25 नवंबर, 1949 को डा अम्बेडकर ने आगाह किया था कि संविधान समता और बराबरी पर जोर देगा, लेकिन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में लंबे समय से चल रहे विरोधाभास अनेक अवरोध उत्पन्न करेंगे। ऐसे में संवैधानिक लोकतंत्र को व्यावहारिकता में चल रही अलोकतांत्रिक परंपराओं का सामना करन पड़ेगा। स्पष्ट है कि यह आमजन की और राजनीतिक नेतृत्व की जिम्मेदारी होगी कि इन दूरियों को समाप्त किया जाए। संविधान की आत्मा को समझकर उसके क्रियान्वयन के लिए जो आवश्यक तत्त्व इन दोनों के भाषणों से निकलते हैं, वे हैं अनुकरणीय नेतृत्व तथा नागरिकों का चयनित नेताओं और उनके चरित्र पर विश्वास बने रहना। प्रारंभ तो सही दिशा में हुआ था, लेकिन सत्ता के आकर्षण से अनेक राजनेता दिग्भ्रमित होते रहे और वे संविधान की मूल भावना से मुंह फेर कर देशहित ही भूल गए। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009